NEW ERA AGRICULTURE MAGAZINE

महिला दिवस : नारी सशक्तिकरण का प्रतीक

[1]डॉ सुमेधा चौधरी, [2]दिव्या कौशिक

भूमिका:

महिला दिवस केवल एक दिन नहीं, बल्कि नारी शक्ति, समानता और अधिकारों की लड़ाई का प्रतीक है। हर साल 8 मार्च को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस (International Women's Day) मनाया जाता है, जिसका उद्देश्य महिलाओं के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक योगदान को सम्मानित करना है। यह दिन महिलाओं के संघर्षों, उनकी उपलब्धियों और उनके अधिकारों की दिशा में किए गए प्रयासों को याद दिलाता है।

समाज में महिलाओं की भूमिका हमेशा से महत्वपूर्ण रही है, लेकिन उन्हें समान अधिकार प्राप्त करने के लिए लंबा संघर्ष करना पड़ा है। महिला दिवस हमें यह सोचने पर मजबूर करता है कि क्या वास्तव में आज महिलाएं पूर्ण रूप से स्वतंत्र और सशक्त हैं, या अभी भी कई क्षेत्रों में उन्हें समानता की लड़ाई लड़नी पड़ रही है।

महिला दिवस का इतिहास

महिला दिवस की शुरुआत 20वीं शताब्दी की शुरुआत में हुई। इसका श्रेय अमेरिका और यूरोप की महिलाओं को जाता है, जिन्होंने समान वेतन, काम करने के उचित घंटे और मतदान के अधिकार के लिए आंदोलन चलाए।

महत्वपूर्ण घटनाएँ

1. 1908 – अमेरिका के न्यूयॉर्क शहर में 15,000 महिलाओं ने अपने अधिकारों के लिए प्रदर्शन किया।
2. 1910 – जर्मनी की समाजवादी नेता क्लारा ज़ेटकिन ने अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस मनाने का प्रस्ताव दिया।
3. 1911 – पहली बार ऑस्ट्रिया, डेनमार्क, जर्मनी और स्विट्जरलैंड में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया।
4. 1975 – संयुक्त राष्ट्र (UN) ने इसे आधिकारिक रूप से मान्यता दी और इसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मनाना शुरू किया।

आज यह दिन दुनिया भर में महिलाओं की स्थिति को बेहतर बनाने और लैंगिक समानता की दिशा में काम करने के लिए प्रेरित करता है।

महिला सशक्तिकरण और उसकी आवश्यकता

1. शिक्षा और महिला सशक्तिकरण

शिक्षा महिलाओं के आत्मनिर्भर बनने की कुंजी है। भारत में आज भी कई क्षेत्रों में लड़कियों को शिक्षा से वंचित रखा जाता है। बेटियों को शिक्षित करने से वे अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होती हैं और समाज में एक मजबूत स्थान बना सकती हैं।

2. आर्थिक स्वतंत्रता और रोजगार

महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता उन्हें आत्मनिर्भर बनाती है। जब महिलाएँ नौकरी करती हैं या व्यवसाय चलाती हैं, तो वे अपने परिवार और समाज के विकास में योगदान देती हैं। सरकार ने इसके लिए कई योजनाएँ चलाई हैं, जैसे – मुद्रा योजना, बेटी बचाओ

[1] डॉ सुमेधा चौधरी, [2]दिव्या कौशिक
सामुदायिक विज्ञान विभाग
चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर

बेटी पढ़ाओ, महिला उद्यमिता योजना आदि।

3. महिलाओं के खिलाफ हिंसा और कानून

आज भी समाज में घरेलू हिंसा, दहेज हत्या, यौन उत्पीड़न, बाल विवाह जैसी समस्याएँ मौजूद हैं। महिलाओं की सुरक्षा के लिए दहेज निषेध अधिनियम, घरेलू हिंसा अधिनियम, कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न कानून आदि बनाए गए हैं, लेकिन इन्हें सही से लागू करना जरूरी है।

4. राजनीति और महिला नेतृत्व

राजनीति में महिलाओं की भागीदारी बेहद जरूरी है। भारत में महिला आरक्षण बिल लाने की कोशिशें हुई हैं, जिससे उन्हें संसद और विधानसभाओं में 33% आरक्षण दिया जाए। इंदिरा गांधी, प्रतिभा पाटिल, ममता बनर्जी, निर्मला सीतारमण जैसी महिलाएँ राजनीति में मजबूत उदाहरण हैं।

महिला दिवस का महत्व

महिला दिवस केवल एक औपचारिकता नहीं, बल्कि एक क्रांति का प्रतीक है। इसका उद्देश्य महिलाओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करना, समाज में समानता लाना और महिलाओं के प्रति भेदभाव को खत्म करना है।

महिला दिवस हमें यह सिखाता है कि –

- महिलाएँ केवल घर तक सीमित नहीं हैं, वे हर क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर सकती हैं।
- महिलाओं को समान अवसर और अधिकार मिलना चाहिए, ताकि वे समाज में बराबरी से खड़ी हो सकें।
- महिलाओं की सुरक्षा और सम्मान को प्राथमिकता दी जानी चाहिए।
- लैंगिक भेदभाव खत्म कर एक समतावादी समाज का निर्माण करना जरूरी है।

महिला सशक्तिकरण के लिए आवश्यक कदम

1. महिला दिवस पर हम केवल भाषण न दें, बल्कि वास्तविक परिवर्तन लाने के लिए कुछ ठोस कदम उठाएँ।
2. बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ अभियान को आगे बढ़ाएँ – हर लड़की को शिक्षा मिले, यह सुनिश्चित करें।
3. महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाएँ – उन्हें रोजगार के अवसर दें और उन्हें आर्थिक रूप से मजबूत करें।
4. लैंगिक भेदभाव को समाप्त करें – घर, स्कूल और कार्यस्थल पर समानता को बढ़ावा दें।
5. महिला सुरक्षा को प्राथमिकता दें – समाज में महिलाओं के खिलाफ होने वाली हिंसा को रोकें और अपराधियों को सख्त सजा दी जाए।
6. महिलाओं को नेतृत्व के लिए प्रेरित करें – राजनीति, विज्ञान, खेल, बिजनेस आदि में महिलाओं को आगे आने के अवसर दें।

निष्कर्ष

महिला दिवस सिर्फ एक दिन मनाने का विषय नहीं है, बल्कि यह हमें सालभर यह याद दिलाता है कि महिलाओं को उनका हक दिलाने के लिए हमें लगातार काम करना होगा। जब महिलाएँ सशक्त होंगी, तो समाज और देश की उन्नति भी निश्चित होगी।

हमें एक ऐसा समाज बनाना है जहाँ लड़का और लड़की में कोई भेदभाव न हो, जहाँ हर महिला सुरक्षित, शिक्षित और आत्मनिर्भर हो। तभी सच्चे अर्थों में महिला दिवस मनाने का उद्देश्य पूरा होगा।